International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 19-04-2026, Accepted: 20-05-2026, Published: 04-06-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 162-163

फणिश्वरनाथ रेणु के उपन्यास 'मैला आँचल' में आंचलिकता

उमा बणिचुल
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी प्राचार सभा, हैदराबाद, तेलंगाना, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.2.12156

सारांश
यह शोध पत्र 'मैला आँचल' उपन्यास में गाँव के सजीव चित्रण हुआ है। ग्रामीण रहन – सहन के अच्छाइयों तथा बुराइयों के चित्रण सुन्दर ढंग से हुआ है। इसलिए इस उपन्यास आंचलिकता को प्रमाणित करते हुए आंचलिक उपन्यास है।

मूल शब्दः आंचल, आंचलिकता, मैला, महानगरीय परिवेश, ग्रामीण परिवेश, लोकगीत, संस्कृति

हिन्दी कथा साहित्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण कथाकार फणिश्वर नाथ रेणु का जन्म ४ मार्च १९२१ को बिहार राज्य, पूर्णिया जिला औराही हिंगना नामक गाँव एक मध्यवर्गीय किसान परिवार में हुआ था। इन्होंने दमन और शोषण के विरुद्ध आजीवन संघर्ष किए थे। राजनीति में भी सक्रिय भागीदारी लिए थे। इन्होंने १९४२ के भारतीय स्वाधीनता–संग्राम में प्रमुख सेनानी की भूमिका निभाई। इसके लिए कारावास भी गए। १९५२– १९५३ में इनका दीर्घकाल तक स्वास्थ्यगत समस्या आने लगी। धीरे – धीरे साहित्य सृजन की ओर अत्यधिक झुकाव हुआ । १९५४ में उसके बहुचर्चित उपन्यास 'मैला आँचल' प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास इन्हें हिन्दी सहिय जगत में स्वतंत्र स्थान स्थापित कर दिया। यह उपन्यास में इन्होंने महानगरीय परिवेश से हट कर ग्रामीण जीवन का गहन रागात्मक और रसपूर्ण चित्र वर्णन किया। यहाँ ग्रामीण जीवन की सजीवता, संघर्ष संस्कृति और संवेदना की वास्तविकता बेहद वर्णन हुआ है।

'मैला' शब्द का अर्थ है – मलिन, गन्दा, दागदार, जिसकी चमक – दमक मारि गई हो।' आंचल' शब्द का अर्थ है – किसी क्षेत्र का हिस्सा जो अपनी अलग विशेषताएँ रखता हो। 'मैला आंचल' उपन्यास का नामकरण को संक्षिप्त रूप से कह सकते हैं कि एक पिछड़े, शोषित और उपेक्षित गाँव का सच्चा और यथार्थ चित्रण। विस्तार में १. आंचल ही नायक अर्थात उपन्यास में किसी एक व्यक्ति को नहीं पूरे गाँव को ही केंद्रीय रूप से रखा गया है। २. गाँव की सच्ची और यथार्थवादी चित्रण अर्थात बिहार के पूर्णिया जिले के मेरीगंज गाँव के वास्तविक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन का चित्रण किया गया। आंचलिकता की प्रतीक अर्थात क्षेत्र की बोली, लोक – संस्कृति, रीति रिवाजों और वहाँ लोगों के संघर्षों को वर्णना किया गया।

'आंचलिकता' शब्द को संक्षिप्त रूप से ' क्षेत्रियता भी कहा जाता है अर्थात क्षेत्र विशेष से संबंध रखने वाली स्थिति। व्यापक रूप से – किसी अंचल विशेष की भौगालिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं को साहित्य में प्राधान्य देते हुए चित्रित करने से है। यह ऐसा विधा है, जहाँ स्तानीय जगजीवन, बोलियों, रुढियों और लोकगीतों आदि को आधार बनाई गई और क्षेत्र ही एक पात्र की तरह प्रकट होता है। आंचलिकता की विशेषताएँ है – स्थानीयता, क्षेत्रीय बोली का प्रयोग, परिवेश का चित्रण और आंचल ही नायक है। जे. ए. कुडन के अनुसार" एक आंचलिक लेखक एक विशेष क्षेत्र पर अधिक ध्यान केन्द्रित करता है और उस क्षेत्र और वहाँ के निवासियों को अपनी कथा का आधार बनता है। "१ हिन्दी साहित्य कोश में कहा गया है कि –" लेखक द्वारा अपनी रचना में आंचलिकता की सिद्धि के लिए स्थानिय – श्यों, प्रकृति, जलवायु, त्योहार लोकगीत, बातचीत का विशिष्ट ढंग, मुहावरे, लोकक्तियाँ, भाषा के उच्चारण की विकृतियाँ, लोगों की स्वभावगत व व्यवहारगत विशेषताएँ, उनका अपना रोमांस नैतिक मान्यताओं आदि का समावेश बड़ी सतर्कता और सावधानी से किया जाता है।"२

'मैला आंचल' उपन्यास हिन्दी साहित्य में आंचलिकता का प्रमुख आधार स्तंभ है। यह उपन्यास केवल उपन्यास नहीं बल्कि उस क्षेत्र के संपूर्ण जीवन का दस्तावेज है। उसमें बिहार के पूर्णिया जिले के मेरीगंज गाँव की आंचलिकता का चित्रण हुआ है। उपन्यास कथा के बारे में खुद फणिश्वरनाथ 'रेणु' वही का प्रथम संस्करण की भूमिका में कहा है कि – "कथानक है पूर्णिया। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है य इसके एक ओर नेपाल, दूसरी ओर पाकिस्तान और पशिम बंगाल। विभिन्न सीमा रेखाएँ खीच देते हैं। मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गावों का प्रतीक मानकर – इस उपन्यास कथा का क्षेत्र बनाया है। इसमें फूल भी हैं, शूल भी, धूल भी है गुलाब भी, कीचड़ भी है, चन्दन भी है, सुन्दरता भी है, कुरुपता भी "३

मेरीगंज एक बड़ा गाँव है। रेणुजी ने इस गाँव का भौगलिक एवं प्राकृतिक परिवेश का सुन्दरता के साथ – साथ कुरूपता का भी चित्रण किया है – "गाँव के पूरब एक धरा है जिसे कमला नदी कहते है। बरसात में कमला भर जाति है, बाकि मौसम में बड़े – बड़े गढ़ों में पानी जमा रहता है। मछलियों और कमल के फूलों से भरे हुए गढ़े" ४ इसमें गाँव के पूर्व दिशा की प्राकृतिक और भौगोलिक सजीवता प्रस्तुत किया गया। रेणु जी मेरीगंज गाँव के सुन्दर दृश्य के बारे में कहा है – " ऐसा ही एक गाँव मेरीगंज। रौतहट स्टेशन से सात कोस पूरब, बूढी कोशी को पार करके जाना होता है। बूढी कोशी के किनारे – किनारे बहुत दूर तक ताड और खजूर पेड़ों से भरा हुआ जंगल है। इस अंचल के लोग इसे नवाबी ताडबन्ना कहते हैं।"५ रेणु जी ताडबन्ना की चौत की वातावरण को वर्णना करते हुए कहा है कि – " चौत की गोधुली में अपनी सारी तेजी खोकर सूरज ने श्याम – सलोनी संध्या के अंचल में अपना मुहँ छिपा लिया था। दूर तक फैली हुई ताड़ों की पंक्तियों, कुछ मटमैली, कुछ सिंदूरी सी पृष्टभूमि में गर्दन ऊँची करके सूरज को अतल गहराई में डूबते हुए देख रही थी।" ६ ग्रामीण जीवन से जुड़े खेत खलिहान गाँव के मुख्य आकर्षण होता है। लागों के मन को हरण कर लेता है। रेणु जी गाँव के खेत के बारे में लिखे हैं –" खेत में पाट के लाल पौधों को देख कर जी ललच रहा है। धान की हरी – हरी सूई खेत में निकल आई है। माटी का मोह नहीं टूटता।"७ ' मैला आँचल' उपन्यास में रेणु जी ने गाँव का सामाजिक जीवन शैली गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास आदि वास्तविकता का चित्रण किया है। रेणु जी गाँव के लागों के स्वभाव के बारे में लिखते है. – " गाँव के लोग बड़े

सीधे दीखते हैं य सीधे का अर्थ यदि अपढ़, अज्ञानी और अंधविश्वासी हो तो वास्तव में सीधे हैं वे। जहाँ तक सांसारिक बुद्धि का सवाल है, वे हमारे और तुम्हारे जैसे लोगों को दिन में पांच बार ठग लेंगे और तारीफ यह है कि तुम ठगी जाकर भी उनकी सरलता पर मुग्ध होने के लिए मजबूर हो "जाओगी।"८
इसमें गाँव के लोग सरल होने को दर्शाया गया।
रेणु जी 'मैला अंचल' उपन्यास में भाषा को ओर अधिक प्रभावमयी बनाने हेतु लोक प्रचलित साधारण क्षेत्रीय शब्दावली प्रयोग के साथ – साथ भषा के उच्चारण की विकृतियाँ किया है। इस उपन्यास में जिस क्षेत्र का वर्णन है वहाँ बहुतांश लोग मैथिली बोलते हैं। इसलिए उपन्यास में बहुसंख्यक मैथिली शब्द प्रयोग हुआ है। जैसे – भखर–भखर देखना, उहाल, बोरसी, अटर – पटर, आदि। विकृत स्थानीय देशज शब्द है – गंधी महतमा, परभू, इस्तरी, वेकूफ, आदोलन आदि। विकृत विदेशज शब्द हैं – भैंसचरमनबाबू, जन्तर, पुलोगराम, ललमुनियाँ, नन्दन आदि।
इस उपन्यास में रेणुजी स्थानीय लोकगीतों की भी प्रयोग करके उपन्यास को विशेष आंचलिक उपन्यास बनाया। शोषण विरोधी जागृत करने लोगगीत –

"उठ मेहनतकश अब होश में आ
हाथ में झंडा लाल उठा
जुल्म का नामोनिशान मिटा
उठ होश में आ बेदार हो जा। "६

इसमें अन्याय और जूल्म को खतम करके परिवर्तन लाने के लिए आह्वान किया गया।

क्रांति संबंधी लोकगीत

"अरे जिंदगी हे किरांती से, किरांती में बनाए जा
दुनिया के पूजीवाद को दुनियाँ से मिटाए जा। "१०

इसमें इसमें जीवन को सामाजिक – आर्थिक परिवर्तन के लिए समर्पित करके विश्व में पूंजीवाद को हटा कर समानतावादी समाज की स्थापना करने के लिए कहा गया। स्पष्ट रूप से क्रांति लोकगीत को दर्शाया गया है। स्वराज की खुशी में ग्रामीणों द्वारा गाया गया लोकगीत

" चांदो बनिया सजिलो बरात ओ हो
एक लाख हाथी सजिलो, दुई लाख घोडा
चार लाख पैदल, दूल्हा बाला लखिंदर।"११

इसमें आजादी की खुशी को नारे के साथ – साथ अमहरा का चानखोलावालों की पीपही पर बिहला नाच और बरातवाला गीत बजा कर कुछ लोग पैदल चलते हुये, सजधज हाथी घोड़ों को सम्मिलित करते हुए खुशी मानाने को दर्शाया गया है। इस खुसी में उजाड़दास कीर्तन भी करने लगे। कीर्तन गीत है :–

"भारत में आयल सूरज
चलु सखी देखन को.....
कथि जे चढिये आयल
बीर जमाहिर
कथि पर गंधी महाराज। चलु सखी....
हाथी चढ़ल आवे भारथमाता
डोली में बैठल सूरज ! चलु सखी देखन को.....
घोडा चढिये आये बीर जमाहिर
पैदल गंधी महाराज ! चलु सखी देखन को।"१२

इसमें ये कीर्तन गीत तत्कालीन राजनीतिक स्थिति का सजीव चित्रण किया है। प्रेमपूर्ण लोकगीत –
"नयना मिलनी कारी ले रे सैयाँ,
नयना मिलनी कारी ले !
अबकी बेर हम नैहर रहबौ
जे दिल चाहय से करी लो !" १३

इसमें नायिका आपनी पति से आँखें मिलाने का आग्रह कर रही है। पत्नी मायका जा रही है तो दिल के अनुसार कार्य करने के लिए पति को कह रही है।
'मैला आंचल' उपन्यास में आंचलिकता का अर्थ को आधार मानते हुए यह कहा जा सकता है कि मैला आंचल स्थानीयता, क्षेत्रीय बोली, परिवेश का चित्रण और अंचल ही नायक है। यह एक आंचलिक उपन्यास है और हिन्दी साहित्य के लिए अनमोल है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. अमरनाथ हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली पृ. –48
2. डॉ. अमरनाथ हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली पृ. –48 –49
3. फणिश्वरनाथ रेणु मैला आंचल पृ.– भूमिका
4. फणिश्वरनाथ रेणु मैला आंचल पृ.– 11
5. फणिश्वरनाथ रेणु मैला आंचल पृ.– 09
6. फणिश्वरनाथ रेणु मैला आंचल पृ.– 108
7. फणिश्वरनाथ रेणु मैला आंचल पृ.– 121
8. फणिश्वरनाथ रेणु मैला आंचल पृ.– 39
9. फणिश्वरनाथ रेणु मैला आंचल पृ.– 66
10. फणिश्वरनाथ रेणु मैला आंचल पृ.– 119
11. फणिश्वरनाथ रेणु मैला आंचल पृ.– 163
12. फणिश्वरनाथ रेणु मैला आंचल पृ.– 163
13. फणिश्वरनाथ रेणु मैला आंचल पृ.– 91